फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (क़िस्त : 20)

क़ुत़्बे आ़लम

की अ़जीब करामत

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मदनी मुज़ाकरा नम्बर 9 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा" ने नई तरतीब और कसीर नए मवाद के साथ तय्यार किया है।

पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

जाइज़ व मुस्तह़सन काम मसलन मद्रसे और दर्स वग़ैरा से रोकेगा वोह आख़िरत में इस का जवाब देह होगा क्यूंकि मसाजिद बनाई ही इन कामों के लिये जाती हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन मह़मूद नस्फ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मसाजिद इ़बादत करने और ज़िक्र करने के लिये बनाई गई हैं और इ़ल्म का दर्स भी ज़िक्र में दाख़िल है।[1]

आज के इस पुर फ़ितन दौर में फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देने और सुनने की बहुत अशद ज़रूरत है क्यूंकि गुनाहों की यलग़ार, ज़राएए इब्लाग़ में फ़ह़्ह़ाशी की भरमार और फ़ैशन परस्ती की फिटकार कई मुसलमानों को बे अ़मल बना चुकी है, नीज़ इ़ल्मे दीन से दूरी और हर ख़ासो आ़म का रुजह़ान सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम की त़रफ़ होने की वज्ह से हर त़रफ़ जहालत ही जहालत है, ला दीनियत व बद मज़ह़बियत का सैलाब तबाहियां मचा रहा है, गुलशने इस्लाम पर ख़ज़ां के बादल मन्डला रहे हैं, कितने ही ऐसे नमाज़ी हैं जिन्हें सह़ीह़ मा'नों में नमाज़ पढ़ना नहीं आती, नमाज़ के रुकूअ़ व सुजूद पूरे नहीं करते ह़ालांकि नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद पूरे न करने वाले को ह़दीसे पाक में नमाज़ का चोर फ़रमाया गया है चुनान्चे, ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : लोगों में बद तरीन चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ का चोर कौन है ? इरशाद फ़रमाया : वोह जो नमाज़ के रुकूअ़ और सजदे पूरे न

مدینہ

1 ..... تفسیر نسفی، پ۱۰، التوبہ، تحت الآیۃ: ۱۸، ص۴۲۹ دار المعرفہ بیروت

www.dawateislami.net

करे ।[1] ऐसी सूरते ह़ाल में हमें लोगों को ह़िक्मते अ़मली और नर्मी से दर्स की अहम्मिय्यत समझानी चाहिये ।

याद रहे कि मस्जिद में "फ़ैज़ाने सुन्नत" का दर्स देने से जहां लोगों के अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ होती और उन्हें इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने का मौक़अ़ मिलता है वहां मसाजिद भी आबाद होती हैं । येह मस्अला ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि मसाजिद में दर्स से रोकना गोया मसाजिद को वीरान करने की कोशिश करना है और मसाजिद को वीरान करने वालों के लिये पारह 1 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 114 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

﴿وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ یُّذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِیْ خَرَابِهَا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की मस्जिदों को रोके इन में नामे ख़ुदा लिये जाने से और इन की वीरानी में कोशिश करे ।

इस आयते मुबारका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : "ज़िक्र" नमाज़, ख़ुत़बा, तस्बीह़, वा'ज़, ना'त शरीफ़ सब को शामिल है और ज़िक्रुल्लाह को मन्अ़ करना हर जगह बुरा है । ख़ास कर मस्जिदों में जो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं । जो शख़्स मस्जिद को ज़िक्र व नमाज़ से मुअ़त्त़ल कर दे (या'नी मस्जिद में ज़िक्रो अज़्कार और नमाज़ न होने दे तो) वोह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत ज़ालिम है ।[2] अलबत्ता वोह लोग जो क़ुरआनो सुन्नत का झांसा (धोका) दे कर मुसलमानों में बद मज़्हबी

مدینہ

1 ..... مُسندِ امام احمد، مسند الأنصار، ۸/۳۸۲، حدیث: ۲۲۷۰۵

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 114 मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

फैलाते और उन्हें सीधे रास्ते से हटाते हैं उन्हें मसाजिद में बयान वग़ैरा से रोकना जाइज़ बल्कि ज़रूरी है चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बिलाशुबा उ़लमाए अहले सुन्नत पर इआ़नते सुन्नत (या'नी सुन्नत की ह़िमायत) व इहानते बिदअ़त (या'नी बिदअ़त की तौहीन) तह़रीरन व तक़रीरन ब क़दरे कुदरत फ़र्ज़े अहम व आ'ज़म है और हर मूज़ी (अज़ियत देने वाले) को मस्जिद से निकालना ब शर्ते इस्तिता़अ़त वाजिब, अगर्चे सिर्फ़ ज़बान से ईज़ा (तक्लीफ़) देता हो ख़ुसूसन वोह जिस की ईज़ा मुसलमानों में बद मज़हबी फैलाना और इज़लाल व इग़वा (गुमराह करना और वर्ग़लाना) हो।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन सीखने सिखाने के जज़्बे के तह़्त हर मुसलमान ख़्वाह वोह इमामे मस्जिद हो या मुअज़्ज़िन, मस्जिद की कमेटी के सद्र साह़िब हों या चेरमेन, सेक्रेट्री हों या ख़ज़ानची, डॉक्टर हों या इन्जीनियर अल ग़रज़ दीनी व दुन्यवी किसी भी शो'बे से वाबस्ता हो उसे अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाना चाहिये कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ।" इस अ़ज़ीम मदनी मक़्सद के हुसूल में कामयाबी पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना और सुनना भी है लिहाज़ा जो इस्लामी भाई दर्स दे सकते हैं वोह अपनी मसाजिद और घरों में दर्स दे कर और जो नहीं दे सकते वोह दर्स में शामिल हो कर ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत को आ़म कर के इस की बरकतें लूटने की कोशिश करें। मसाजिद में दर्स देने और मद्रसतुल मदीना बालिग़ान लगाने वालों को चाहिये कि अपनी आवाज़ इतनी बुलन्द न करें जिस से दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को तश्वीश हो और न ही नमाज़ियों

1.....फ़तावा रज़विय्या, 14 / 595

www.dawateislami.net

के चेहरे की सीध में दर्स दें। इसी त़रह़ रात बहुत देर तक मद्रसे के नाम पर मस्जिद में बैठे रहने, हंसी मज़ाक़ करने, लाइटों और पंखों का बेजा इस्ति'माल करने, मोबाइल फ़ोन Charge करने, बिला इजाज़ते शरई कमेटी और इमाम व मुअज़्ज़िन साहिबान के ख़िलाफ़ गुफ़्तगू करने से सख़्ती से परहेज़ करें। हमें दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत और मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के ज़रीए नेकी की दा'वत आ़म करनी है तो येह अ़ज़ीम मदनी काम शरीअ़त व ह़िक्मत के दाइरे में रह कर होना चाहिये। ऐसी भी मसाजिद हैं कि जिन में पहले दर्स देने और मद्रसतुल मदीना बालिग़ान लगाने की इजाज़त नहीं थी मगर इस्लामी भाइयों की मह़ब्बत भरी इनफ़िरादी कोशिशों से दर्स देने, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान लगाने और मदनी क़ाफ़िले ठहराने की भी इजाज़त मिल गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मसाजिद आबाद करने वाला बनाए और हर उस काम से बचाए जो मसाजिद की वीरानी का सबब बने। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दर्स से रोकने वालों को कैसे राज़ी किया जाए ?

सुवाल : "फ़ैज़ाने सुन्नत" के दर्स से रोकने वालों को कैसे राज़ी किया जाए ?

जवाब : "फ़ैज़ाने सुन्नत" के दर्स से रोकने वालों को दर्स की अहम्मिय्यत और इस के फ़वाइद व बरकात बता कर ह़िक्मते अ़मली और नर्मी के साथ समझाने की कोशिश की जाए اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा जैसा कि पारह 27 सूरतुज़्ज़ारियात की आयत नम्बर 55 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है।

दर्स से रोकने वालों का यूं ज़ेह्न बनाया जाए कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देने से भलाई फैलती और बुराई मिटती है आप मस्जिद में

www.dawateislami.net

दर्स शुरूअ़ करवा कर भलाई फैलाने और बुराई मिटाने का ज़रीआ़ बनें कि ऐसे लोगों को ह़दीसे पाक में मुबारक बाद से नवाज़ा गया है चुनान्चे, सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो भलाई के फैलने और बुराई को रोकने का ज़रीआ़ होते हैं और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बुराई फैलने और भलाई में रुकावट का ज़रीआ़ होते हैं मुबारक हैं वोह लोग जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ैर के फैलने का ज़रीआ़ बनाया।(1) बहर ह़ाल आप के समझाने और दर्स के फ़ज़ाइलो बरकात बताने के बा वुजूद भी इजाज़त न मिले तो मस्जिद की बा असर शख़्सियात से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की इजाज़त दिलवाने की तरकीब बनाई जाए। अगर फिर भी काम न बने तो बह़सो मुबाह़सा करने के बजाए सब्र से काम लीजिये और पांचों नमाज़ें मुमकिना सूरत में उसी मस्जिद में अदा कीजिये और नमाज़ों के बा'द कमीटी के अराकीन और दीगर नमाज़ियों से ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी न कभी राह ज़रूर हमवार हो जाएगी।

खजूर से रोज़ा इफ़्त़ार करने में ह़िक्मत

सुवाल : खजूर से रोज़ा इफ़्त़ार करने में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : खजूर से रोज़ा इफ़्त़ार करना सुन्नत है और सुन्नत में यक़ीनन ह़िक्मत ही ह़िक्मत है अगर्चे हमें इस के बारे में इ़ल्म न हो। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ से पहले तर खजूरों से रोज़ा इफ़्त़ार फ़रमाते, तर खजूरें न होतीं तो चन्द ख़ुश्क खजूरों (या'नी छुवारों) से और येह भी न होतीं

1 ...... ابنِ ماجہ، کتاب السنة، باب من کان مفتاحا للخیر، ۱/۱۵۵، حدیث: ۲۳۷ دار المعرفه بیروت

www.dawateislami.net

तो चन्द चुल्लू पानी पीते।[1] लिहाज़ा जब भी रोज़ा इफ़्तार करें तो इस सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से तर खजूर से रोज़ा इफ़्तार करें, येह न हो तो छुवारे से, येह भी मौजूद न हो तो फिर पानी से रोज़ा इफ़्तार कर लें कि येह हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नत है।

खजूर से रोज़ा इफ़्तार करने में एक ह़िक्मत येह है कि खजूर मीठी होती है और ख़ाली पेट मीठी चीज़ खाना सिह़्ह़त के लिये ख़ुसूसन नज़र के लिये मुफ़ीद है।

खजूर से रोज़ा इफ़्तार करने में एक ह़िक्मत येह भी है कि रोज़े में चूंकि दिन भर पेट ख़ाली होता है जिस की वज्ह से रोज़ादार को कमज़ोरी मह़सूस होती है तो इफ़्तार के वक़्त उस के लिये खजूर बहुत मुफ़ीद है क्यूंकि येह ग़िज़ाइय्यत से भरपूर है। इस के खाने से जल्द तवानाई बह़ाल हो जाती है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जैसे ही सूरज ग़ुरूब होने का यक़ीन हो जाए तो फ़ौरन कोई चीज़ खा या पी लीजिये मगर खजूर या छुवारा या पानी से इफ़्तार करना सुन्नत है। इफ़्तार के बा'द दुआ भी ज़रूर मांगिये कि येह सुन्नत है और इस की बड़ी फ़ज़ीलत आई है जैसा कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से फ़रमाया : ऐ अ़ली ! जब तू माहे रमज़ान में रोज़ादार हो तो इफ़्तार के बा'द यूं दुआ कर :

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तुझ पर भरोसा किया और तेरे दिये हुवे रिज़्क़ से इफ़्तार किया।"

1 ..... ابوداود، کتاب الصوم، باب مایفطر علیہ، ۲/۴۴۷، حدیث: ۲۳۵۶ دار احیاء التراث العربی بیروت

www.dawateislami.net

يُكْتَبُ لَكَ مِثْلُ مَنْ كَانَ صَائِمًا مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْءٌ

"तो तेरे लिये तमाम रोज़ादारों की मिस्ल अज्र लिखा जाएगा और उन के अज्र में भी कुछ कमी न होगी।"(1)

"ह़लीम" को "खिचड़ा" कहने की वज्ह

सुवाल : एक मश्हूर खाना जिसे "ह़लीम" कहा जाता है, मगर बा'ज़ लोग इसे "खिचड़ा" कहते हैं और दूसरों को भी इसे "खिचड़ा" कहने की तरग़ीब दिलाते हैं, इस में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : "खिचड़े" को "ह़लीम" कहना भी जाइज़ है मगर चूंकि "ह़लीम" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक सिफ़ाती नाम है इस लिये खाने की चीज़ के लिये येह लफ़्ज़ इस्ति'माल नहीं करना चाहिये। इस ग़िज़ा को उर्दू में "खिचड़ा" भी कहते हैं लिहाज़ा इस के लिये येही लफ़्ज़ इस्ति'माल किया जाए। बा'ज़ औक़ात किसी दुन्यवी शै पर मुतबर्रिक अल्फ़ाज़ न बोलना भी अदब होता है, इस ज़िम्न में एक ह़िकायत मुलाह़ज़ा कीजिये चुनान्चे, तज़्किरतुल औलिया में है : ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي ने एक बार सुर्ख़ रंग का सेब हाथ में ले कर फ़रमाया : येह तो बहुत ही "लत़ीफ़" है। ग़ैब से आवाज़ आई : हमारा नाम सेब के लिये इस्ति'माल करते हुवे ह़या नहीं आई ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चालीस दिन के लिये अपनी याद उन के दिल से निकाल दी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी क़सम खाई कि अब कभी बिस्त़ाम का फल नहीं खाऊंगा।(2)

1 ...... مسند الحارث، کتاب الوصایا، باب وصیة سیدنا رسول اللہ صلّی اللہ علیہ وسلم، ۱/۵۲۶، حدیث: ۴۶۹ مرکز خدمة السنة والسیرة النبویة - المدینة المنورة

2 ...... تذکرۃ الاولیا، باب چہاردھم، ذکر بایزید بسطامی، ص ۱۳۴ إنتشارات گنجینه تهران

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि "लत़ीफ़" का एक लफ़्ज़ी मा'ना "उ़म्दा" है मगर चूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सिफ़ाती नाम भी है इस लिये ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی को तम्बीह की गई तो इसी त़रह़ "ह़लीम" भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सिफ़ाती नाम है लिहाज़ा इसे "खिचड़े" के लिये इस्ति'माल न किया जाए। जितना ज़ियादा अदब करेंगे उतनी ही ज़ियादा बरकतें नसीब होंगी। बहर ह़ाल अगर किसी ने इस ग़िज़ा को ह़लीम कहा तो उसे गुनाहगार नहीं कहा जाएगा, ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی को उन के मन्सबे विलायत की वज्ह से तम्बीह फ़रमाई गई थी।

जो है बा अदब वोह बड़ा बा नसीब और
जो है बे अदब वोह निहायत बुरा है (वसाइले बख़्शिश)

तफ़रीह़न शिकार करना कैसा ?

सुवाल : क्या शिकार करना सुन्नत है ? नीज़ तफ़रीह़न शिकार करना कैसा है ?

जवाब : शिकार अगर ग़िज़ा या दवा या तिजारत की ग़रज़ के लिये किया जाए तो येह जाइज़ है जब कि बत़ौरे तफ़रीह़ शिकार करना ह़राम है। ह़दीसे पाक में है : जो शिकार के पीछे रहा वोह ग़ाफ़िल हो गया।[1] इस ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी जो शिकार का शग़्ल अपना वत़ीरा बना ले कि मह़्ज़ शौक़िय्या शिकार खेलता रहे वोह **अल्लाह** के ज़िक्र, नमाज़ व जमाअ़त, जुमुआ़, रिक़्क़ते क़ल्ब से मह़रूम रहता है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी शिकार न किया। बा'ज़ सह़ाबा ने शिकार किया है मगर शिकार करना और है और शिकार का मश्ग़ला वोह भी मह़्ज़

1 ..... مشکاۃ المصابیح، کتاب الامارۃ والقضاء، الفصل الثانی، ۲/۹، حدیث: ۳۷۰۱ دار الکتب العلمیہ بیروت

www.dawateislami.net

शौक़िय्या कुछ और, शिकार का ज़िक्र तो क़ुरआने करीम में है यहां मश्ग़लए शौक़िय्या का ज़िक्र है लिहाज़ा येह ह़दीस हुक्मे क़ुरआन के ख़िलाफ़ नहीं।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक और इस की शर्ह़ से मा'लूम हुवा कि न तो शिकार करना सुन्नत है और न ही तफ़रीह़न शिकार करने की इजाज़त। बहर ह़ाल अगर किसी ने तफ़रीह़न शिकार किया तो उस का येह फ़े'ल (या'नी शिकार करना) ह़राम है मगर जो मछली या ह़लाल जानवर जिस का शिकार किया गया उसे खाना ह़लाल है जैसा कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : किसी जानवर का शिकार अगर ग़िज़ा या दवा या दफ़्ए़ ईज़ा या तिजारत की ग़रज़ से हो जाइज़ है और जो तफ़रीह़ के लिये हो जिस त़रह़ आज कल राइज है और इसी लिये इसे शिकार खेलना कहते और खेल समझते हैं और वोह जो अपने खाने के लिये बाज़ार से कोई चीज़ ख़रीद कर लाना आ़र जानें, धूप और लू में ख़ाक उड़ाते (या'नी आवारा फिरते) हैं, येह मुत़लक़न ह़राम है। रही शिकार की हुई मछली इस का खाना हर त़रह़ ह़लाल है अगर्चे फ़े'ले शिकार इन नाजाइज़ सूरतों से हुवा हो।[2]

क्या सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मेहंदी लगाई ?

सुवाल : मेहंदी लगाना क़ौली सुन्नत है तो क्या सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक बालों में कभी भी मेहंदी नहीं लगाई ?

जवाब : मेहंदी लगाने की ज़रूरत उस वक़्त पड़ती है जब बाल सफ़ेद हों जब कि "बुख़ारी शरीफ़" की रिवायत के मुत़ाबिक़ हमारे प्यारे आक़ा,

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 361 ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहौर
2 .....फ़तावा रज़विय्या, 20 / 343 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक और सरे अक़्दस में बीस बाल भी सफ़ेद न थे।(1)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दाढ़ी शरीफ़ में कभी ख़िज़ाब न किया कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल ख़िज़ाब की ह़द तक सफ़ेद न हुवे सिर्फ़ चन्द बाल शरीफ़ सफ़ेद थे, चन्द बार सर शरीफ़ में मेहंदी लगाई थी दर्दे सर की वज्ह से।(2)

सब से पहले मेहंदी किस ने लगाई ?

सुवाल : सब से पहले मेहंदी और कतम का ख़िज़ाब किस ने किया ? नीज़ सियाह ख़िज़ाब किस ने शुरूअ़ किया ?

जवाब : सब से पहले मेहंदी और कतम का ख़िज़ाब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने किया जब कि सियाह ख़िज़ाब सब से पहले फ़िरऔ़न ने किया जैसा कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से पहले मेहंदी और कतम का ख़िज़ाब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने किया और सब से पहले सियाह ख़िज़ाब फ़िरऔ़न ने किया।(3)

सफ़ेद दाढ़ी में मेहंदी लगाने की फ़ज़ीलत

सुवाल : क्या सफ़ेद दाढ़ी में मेहंदी लगाने की भी कोई फ़ज़ीलत है ?

जवाब : जी हां। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस

مدینہ

1 ...... بخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی صلّی اللہ علیہ وسلم، ۲/۴۸۷، حدیث: ۳۵۴۸

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 150

3 .....فردوس الاخبار، باب الألف، ۱/۳۵، حدیث: ۴۷ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है : जो शख़्स इस ह़ालत में फ़ौत हुवा कि उस ने (काले ख़िज़ाब के इ़लावा मसलन लाल या ज़र्द मेहंदी का) ख़िज़ाब किया हुवा था, मुन्कर, नकीर उस से क़ब्र में सुवाल नहीं करेंगे, मुन्कर कहेगा : ऐ नकीर ! इस से सुवाल करो। नकीर जवाब देगा कि मैं इस से कैसे सुवाल करूं ह़ालांकि इस के चेहरे पर इस्लाम का नूर है।[1]

ख़ुशी के मौक़अ़ पर मर्द का हाथों में मेहंदी लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या ईद या शादी वग़ैरा ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर मर्द अपने हाथों में मेहंदी लगा सकते हैं ?

जवाब : मर्द ईद या शादी वग़ैरा ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर भी अपने हाथों में मेहंदी नहीं लगा सकते क्यूंकि मेहंदी लगाने से औ़रतों से मुशाबहत होती है और औ़रतों की मुशाबहत इख़्तियार करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ह़दीसे पाक में है कि बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में एक मुख़न्नस को ह़ाज़िर किया गया जिस ने अपने हाथ पाउं मेहंदी से रंगे हुवे थे। इरशाद फ़रमाया : इस का क्या ह़ाल है ? (या'नी इस ने मेहंदी क्यूं लगाई है ?) लोगों ने अ़र्ज़ की : येह औ़रतों से मुशाबहत करता है। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : इसे शहर बदर कर दो लिहाज़ा उस को शहर बदर कर दिया गया, मदीने से निकाल कर नक़ीअ़[2] को भेज दिया गया।[3]

---

1 ... شرح الصدور، باب من لا یسئل فی القبر، ص ۱۵۲ مرکز اھل سنّت برکات رضا ھند

2 ..... "नक़ीअ़" मदीनए मुनव्वरा के बाहर एक जंगल है जहां अहले मदीना के जानवर चरा करते थे। उस मुख़न्नस को इस लिये निकाल दिया ताकि अहले मदीना उस की सोह़बत से बचें और उसे इ़ब्रत हो और तौबा करे और फिर वापस आ जाए। येह मत़लब नहीं कि उसे इस ह़रकत से मन्अ़ नहीं फ़रमाया गया येह निकालना अ़मली मुमानअ़त है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 187)

3 ... ابو داود، کتاب الادب، باب فی الْمُخَنَّثِین، ۴/۳۶۸، حدیث: ۴۹۲۸

www.dawateislami.net

मर्द तो मर्द छोटे बच्चों को भी मेहंदी लगाने की मुमानअ़त है लिहाज़ा वालिदैन को चाहिये कि वोह अपने छोटे बच्चों के हाथ पाउं मेहंदी से न रंगें कि फ़तावा आ़लमगीरी में है : बिला ज़रूरत छोटे बच्चों के हाथ पाउं में मेहंदी नहीं लगानी चाहिये, औ़रतों को हाथ पाउं में मेहंदी लगाना जाइज़ है।[1] हां बच्चियों के हाथ पाउं में मेहंदी लगाने में ह़रज नहीं जैसा कि सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : लड़कियों के हाथ पाउं में (मेहंदी) लगा सकते हैं जिस त़रह़ इन को ज़ेवर पहना सकते हैं।[2]

बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत का वुज़ू नहीं टूटता

सुवाल : क्या बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत का वुज़ू टूट जाता है ?

जवाब : बच्चे को दूध पिलाना नवाक़िज़े वुज़ू (या'नी वोह चीज़ें जो वुज़ू को तोड़ देती हैं उन) में से नहीं लिहाज़ा बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत का वुज़ू नहीं टूटता।

रिज़्क़ में बरकत का वज़ीफ़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" के सफ़ह़ा 128 पर है : एक सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ख़िदमते अक़्दस (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : दुन्या ने मुझ से पीठ फेर ली। फ़रमाया : क्या वोह तस्बीह़ तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह़ है मलाइका की और जिस की बरकत से रोज़ी दी जाती है। ख़ल्क़े दुन्या आएगी तेरे पास ज़लीलो ख़्वार हो कर, तुलूए़ फ़ज्र के साथ सौ बार कहा कर

سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحٰنَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَ بِحَمْدِہٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सात दिन गुज़रे थे कि ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! दुन्या मेरे पास इस कसरत से आई, मैं ह़ैरान हूं कहां उठाऊं कहां रखूं !

(لسان المیزان، حرف العین، ۴/۳۰۴، حدیث: ۵۱۰۰، زہر بقائی علی المواھب، ذکر طبہ صلی اللہ علیہ وسلم من داء الفقر، ۹/۴۲۸ واللفظ لہ)

---

1 .... فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب العشرون فی الزینۃ...الخ، ۵/۳۵۹ دار الفکر بیروت

2 ....बहारे शरीअ़त, 3 / 596, ह़िस्सा : 16 मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	सिर्फ़ मां के सय्यिदा होने से औलाद	
मस्जिद के दाएं कोने में दो मुअ़ल्लक़ तख़्ता	2	सय्यिद नहीं होती	21
कुत़्बे आ़लम की अ़जीब करामत	6	फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स की अहम्मिय्यत	
फ़ासिक़े मो'लिन को अ़मलिय्यात की वज्ह		व फ़ज़ीलत	22
से वली कहना कैसा ?	7	फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स से रोकना कैसा ?	25
वली होने के लिये ईमान व तक़्वा शर्त़ है	11	दर्स से रोकने वालों को कैसे राज़ी किया जाए ?	29
करामात का ज़ुहूर ख़ातिमा बिल ईमान के		खजूर से रोज़ा इफ़्तार करने में हिक्मत	30
लिये सनद नहीं	13	"ह़लीम" को "खिचड़ा" कहने की वज्ह	32
औरादे अ़त्तारिय्या की मदनी बहार	14	तफ़रीह़न शिकार करना कैसा ?	33
सर या चेहरे पर थप्पड़ मारना कैसा ?	16	क्या सरकार ﷺ ने मेहंदी लगाई ?	34
वल्दिय्यत तब्दील करने का हुक्म	17	सब से पहले मेहंदी किस ने लगाई ?	35
शादी कार्ड में क़स्दन किसी और का नाम		सफ़ेद दाढ़ी में मेहंदी लगाने की फ़ज़ीलत	35
बत़ौरे बाप लिखना कैसा ?	18	खुशी के मौक़अ़ पर मर्द का हाथों में मेहंदी	
ले पालक बच्चे की वल्दिय्यत तब्दील करना कैसा ?	19	लगाना कैसा ?	36
बहू का अपने सुसर को "अब्बा जान"		बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत का वुज़ू	
कहना कैसा ?	20	नहीं टूटता	37

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

ISBN
0133012

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ ह़ैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net